

DPN 6298

Title : नित्य पूजा NITYA PŪJĀ

Run. No. 6989

Cat. No. 44

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. / New. / New. / Nep. / नेपालभाषा निर्देश (ने-
new direction.

Size in cms. 17.5 x 8.2

Folios 14 Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ Rajendra Shrestha

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu / Experimented मणिपाल दिनाकर मल्ल

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓

अंकः श्री गुरुवे ॥ ॥ गोविन्द सोपाने दै तारा ३ ॥

समाप्ति वाक्य Ending

श्री लदाचे वर मिळू नये वृजि गोहि कामत्त स्वप्नात वासो भवंतु ॥ लदा दिव प्रीति ॥





ॐ नमः श्रीगुरुवे ॥ ॥ नोसियसोपोल
दौस्वारु ३ ॥ आसनपूजा ॥ दौ आधारे
शक्तये नमः ॥ दौ आत्मनेपुष्पं नमः ॥
गुरुनमस्कारः ॥ अखण्डमण्डलाका
रं ॥ स्वार्नकुय ॥ नोसिय ३ ॥ चेतस्वा
गण गुरु शत्रुनमस्कार ३

न जा किर्त्तनकायासूर्ययातविय
श्रीस्वेषदेवतानित्यपूजा निमित्तथं श्री
सूर्याय अर्घ्यं नमः ॥ प्राणायामः ॥ दज
स्त्राय फट् ४ ॥ लालत जो जलपे ॥ अस्य
दुर्गामन्त्रस्य नारद ऋषिर्गायत्रं छन्दः ॥
श्रीदुर्गादेवताममाजीष्टसिद्धये विनियोगः

गः॥शिरसि॥नारद ऋषये नमः॥
मुखे॥गायत्राय हृदये नमः॥हृदये
श्रीउर्गादेवतायै नमः॥अथ षट्गत्या
स॥दाँ अगुष्ठाभ्यां नमः दीँ तर्जनीभ्यां
नमः दुँ मध्यमाभ्यां नमः दैँ अनामिका
भ्यां नमः दौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥द

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥दाँ हृदया
य नमः दीँ शिरसे नमः दूँ शिखायै नमः
दैँ कवचाय नमः दौँ नेत्रत्रयाय नमः
दः अस्त्राय नमः॥अर्घपात्रपूजा॥॥
दाँ हृदयाय नमः ६ दुँ उर्गायै नमः १०
अर्घपूजा॥गंगायै नमः यमुनायै नमः

सरस्वत्यै नमः गोदावर्त्यै नमः कावे
र्यै नमः॥ आवाहनादिचन्द्रनाक्षतपु
ष्पं नमः॥ शंखपूजा॥ ब्रह्मणे नमः विष्णु
वे नमः रुद्राय नमः ईश्वराय नमः सदा
शिवाय नमः॥ गंगे च यमुने चैव गोदा
वरी सरस्वती नर्मदे सिन्धु कावेरी

जले स्मिन्संविधीभव॥ शंखपात्राय आ
वाहनादिचन्द्रनाक्षतपुष्पं नमः॥ शं
खसुद्राकेने॥ आत्मपूजाः॥ दौ आत्मने
सिंचनं नमः दौ आत्मने अर्घ्यं नमः दूँ आत्म
ने चन्दनं नमः दौ आत्मने अक्षतं नमः
दौ आत्मने पुष्पं नमः॥ ध्वजतथाय॥

सिंहस्थाशिशोखरामरकनप्रख्याच
तुर्जिजैःशंखचक्रधनुःशराश्चदध
नीनेत्रैस्त्रिजिःशोभिना॥आमुक्तांगद
हारकंकणरण्कांचीरण्चूपाङ्गी
डर्गतिहारिणीभवतुमेरुज्ज्वलकु
ण्डला॥ॐङ्गीयेनमःआत्मनेभ्यः

पुष्पिनमः॥वलि विये॥वंवदुकायवंइदं
लिङ्गरुगुरुस्वाहा॥गंगणपनयेवलि
गुरुगुरुस्वाहा॥शंशत्रपात्तायवलि
गुरुगुरुस्वाहा॥वाङ्कुलपुत्रवदुका
थायवलिङ्गरुगुरुस्वाहा॥चांआमु
णायैवलिङ्गरुगुरुस्वाहा॥गाङ्कुल

ग सो शा य इ दं व लिं गृ ह् गृ ह् स्वा हा ॥
यां यो ग्री ष्प इ दं व लिं गृ ह् गृ ह् स्वा
हा ॥ श्रीं क्ष त्र पा ज्ञा य इ दं व लिं गृ
ह् गृ ह् स्वा हा ॥ दे व या न आ स ना ॥
दां आ धा रा दि अ ष्ट प द्मा स ना य न मः ॥ दां कं
म ला स ना य न मः ॥ दां सिं हा स ना य न मः ॥

आ वा ह ना धि

दे व या न ध्या न ॥ सि रु त्वा श शि शे ख रा ॥
दां उ र्गि ये पा र्श्वे न मः ॥ दां उ र्गि ये अ र्धे न
मः ॥ दां उ र्गि ये च न्द न र क्त च न्द न न मः ॥
दां उ र्गि ये अ क्ष र्त्त न मः ॥ दां उ र्गि ये पु ष्य
न मः ॥ दां उ र्गि ये न मः ॥ ३ श्रीं ज रि पु ष्य
न मः ॥ हृ द या दि ॥ दां हृ द या य न मः ॥

इदं वलि गुरु गुरु स्वाहा ॥ दौ शिरसे न
मः ॥ इदं ॥ दौ शिखा येन मः इदं ॥ दौ कव
चायन मः इदं ॥ दौ नेत्रत्रयान्न मः इदं ॥
दः अस्त्रायन मः इदं ॥ दौ हेतुकादिपा
डकी पूजयामि ॥ इदं ॥ दौ प्रयागादिपा
डकी पूजयामि ॥ इदं ॥ दौ असिनीगादि

पाडकी पूजयामि ॥ इदं ॥ दौ वस्त्राद्यादिपा
डकी पूजयामि ॥ इदं ॥ दुंदुगीयेपाडकी
पूजयामि ॥ इदं ॥ आकारनादि ॥ पाद्या
दि ॥ धूप ॥ दीप ॥ नैवेद्य ॥ जप ॥ दुंदु
गीयेन मः ॥ १०८ स्तोत्रा ॥ दौ अखमण्ड
लाकार ॥ जयन्ती मंगला काली भद्रका

० सुमिगुरु



लीकपाविनी दुर्गा क्षमा शिवा भ्रात्री
स्वाहा स्वधान मस्तुते ॥ सर्व मंगल मां
गच्छे शिवे सर्वार्थ साधकेश्वरं नेत्रं
विके गौरि नारायणिन मस्तुते ॥ ब्रह्मा
णिकमलेंद्रु सौम्य वदनी मा देव्यश्री
लीलया कोमरी रिपु दर्पण सनकरी

चक्रायुधा वैष्णवी वासही यनघोर रघु रघु
स्त्री सेंद्रि च वज्रायुधा चामुण्डा गणना
थ जैरव गणारक्षुं तु मां मातृका ॥ ॥
स्वान देव यात नने ॥ तर्पणया य ॥ ॥
दां पिवन्तु देवता सर्वे रुद्राश्चैव वि
नायका योगी क्षत्रपालश्च मम देहे

व्यवस्थिताः॥ मोक्षसचोत्तमानकथा
ननुनावाय॥ आत्मपुत्राया नादेवया
केस्वानकाय॥ मण्डलयागुंकाय॥
थनन्मासलिकाय॥ दः अस्त्रायनमः३
दां अंगुष्ठाभीनमः॥॥ वली जाकिन
ने॥ दां कुलचण्डेश्वराय कुलचण्डे

श्वरी सहिताय नमः॥ शीखया अर्था
या अर्धपात्रया स्वानकथा वलिस
नय इदं वलिं गुरुगुरु स्वाहा॥ लाहा
नदाये॥ दः अस्त्रायनमः॥ संहारमुद्रा
दर्शयेत्॥ नोसिये॥ जाकिर्लखचेतस्वा
नहिलकावतोवते॥ श्रीस्वच्छदेवताष्ट

पुष्पा

जितोसिद्धमश्वसोऽस्त्वनवा सोऽभवत्
 सूर्यसाक्षिथाय॥ श्रीस्वच्छदेवतामिसा
 चनसंपूर्णां चिन्तनकर्मणा साक्षिणे
 श्रीसूर्यामूर्तये अर्घ्यं नमः पुष्पं नमः॥
 नोसिये॥ विष्णु ३ ध्याये॥ ॥ ॥
 धनदेवजपे॥

धनदेवजपे॥ धनदेवजपे॥ धनदेवजपे॥

देव		
त्रैवेद्य		आसन
महानं		बलि
गुरु		अर्घ्य
शंख		पात्र

ॐ आत्मने इदमात्मने नमः
ॐ आत्मने पुष्पे नमः

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ नौसिय ३ ॥ ह्रीं स्वाहा ३
प्राणाया मः ॥ ॥ रु अस्त्राय नमः ४ ॥ न्यास
रुस्त्राय फट् ३ ह्रीं अंगुष्ठाया नमः ह्रीं नर्ज
नीया नमः ह्रीं मध्यमाया नमः ह्रीं अनामि
काया नमः ह्रीं कनिष्ठाया नमः ह्रीं करत
लयक्काया नमः ॥ ह्रीं हृदयाय नमः ह्रीं शि

रसे नमः ह्रीं शिष्यायै नमः ह्रीं कवचाय न
मः ह्रीं नेत्रत्रयाय नमः रु अस्त्राय फट् ॥
अर्घ्यपूजा ॥ अङ्गन ॥ आवाहनादि चन्दना
क्षतपुष्पी नमः ॥ धेनुमुद्रां दर्शयेत् ॥ आत्म
पूजा ॥ ह्रीं आत्मने सिंचन नमः ह्रीं आत्मने चन्द
न नमः ह्रीं आत्मने पुष्पी नमः ॥ शिवाय नमः

आत्मने ध्यान पुष्पी नमः॥ हौं ह्रस्व भा सना
य नमः देव या त ध्यान नये॥ शिवाय नमः
ध्यान पुष्पी नमः॥ शिवाय पादौ नमः॥ हौं शि
वाय अर्ध नमः॥ हौं शिवाय स्नान नमः॥
हौं शिवाय चंदन नमः॥ हौं शिवाय अक्षत
नमः॥ हौं शिवाय पुष्पी नमः॥ शिवाय नमः॥ ३

शालिपुष्पी नमः॥ हृदया दिन पुजादि
वलितये॥ शिवाय वलिं गुरु गुरु स्वाहा
हौं शिवाय नैवेद्य नमः॥ जप॥ शिवाय
नमः॥ १०८॥ स्तोत्र॥ नमः शिवाय शान्ताय
देव या त स्नान नये॥ आत्म पूजा॥ माण्डू
या गुरु देव या स्नान कया कुर्ये॥ न्या सलिका

जिं ग प्रदी द शि जे न

य॥ अर्घ्यास्नानकयावलिसनये॥
चण्डेश्वराय नमः॥ नो सिधे॥ हाँ स्वाहा ३
जा कि चंदन स्नान लंघन हिल का व्रतोलने
श्रीसदाशिवाय नित्य पूजा पूजितो ^{स्व}क्षम
स्व स्वस्वावा सो न वं तु॥ सदा शिव प्रीतिरस्तु॥

